Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal
Volume - 8, Issue - 8, August - 2025

ISSN(o): 2581-6241
Impact Factor: 7.384

DOIs:10.2018/SS/202508010 --:-- Research Paper / Article / Review

परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान एवं समायोजन के संदर्भ में अध्ययन

[1] **देश दीपक**, [2] **दिव्या सिंह**

[1] आईसीएसएसआर शोध अध्येता, शिक्षा विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उ0प्र0, भारत, 208024

[2] एम०एड० शोधार्थी, शिक्षा विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उ0प्र0, भारत, 208024

ई–मेल – [1] ddesh619@gmail.com, [2] ds0352107@gmail.com

सारांश: प्रस्तुत शोध अध्ययन में आत्म–सम्मान एवं समायोजन के बीच संबंध तथा जातीय पृष्ठभूमि के आधार पर उनकी भिन्नताओं का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में उत्तर प्रदेश के कानपुर जनपद के परास्नातक स्तर के *120* विद्यार्थियों (सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति) को सम्मिलित किया गया। आत्म–सम्मान के लिए धर एवं धर द्वारा निर्मित 'सेल्फ स्टीम स्केल' तथा समायोजन के लिए सिन्हा एवं सिंह द्वारा 'ऐडजस्टमेंट इन्वेंटरी फॉर कॉलेज स्टूडेंट' का उपयोग किया गया। आंकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–टेस्ट से किया गया। निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि सामान्य, अन्य पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान तथा समायोजन के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है। सभी वर्गों के विद्यार्थियों ने आत्म–सम्मान और समायोजन में समानता प्रदर्शित की। यह दर्शाता है कि वर्तमान शैक्षिक वातावरण, समान अवसर, सरकारी योजनाएँ, छात्रवृत्तियाँ तथा सामाजिक जागरूकता ने जातीय भेदभाव की अनुभूति को कम किया है। विद्यार्थी जीवन में आत्म–सम्मान और समायोजन दोनों ही परस्पर जुड़े हुए हैं; उच्च आत्म–सम्मान समायोजन क्षमता को बढ़ाता है और सफल समायोजन आत्म–सम्मान को मजबूत करता है। आत्म–सम्मान और समायोजन जातीय पृष्ठभूमि से प्रभावित न होकर व्यक्तिगत अनुभव, परिवार, शिक्षक एवं सामाजिक समर्थन पर अधिक निर्भर करते हैं। यह प्रवृत्ति समाज में समानता, समावेशी शिक्षा और सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन की ओर संकेत करती है।

मुख्य बिन्दु: परास्नातक स्तर के विद्यार्थी, आत्म–सम्मान, समायोजन।

1. प्रस्तावना :

समाज और राष्ट्र की प्रगति का मूल आधार उसके विद्यार्थी होते हैं। विद्यार्थियों का सुदृढ़, संतुलित और आत्मविश्वासी व्यक्तित्व न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन की सफलता को सुनिश्चित करता है, बल्कि समाज और राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। शिक्षा इस प्रक्रिया का केंद्रीय तत्व है, क्योंकि इसका उद्देश्य मात्र शैक्षणिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, आत्मविश्वास की वृद्धि और सामाजिक समायोजन की क्षमता के विकास का भी साधन है। जब विद्यार्थी स्वयं को स्वीकार करता है, अपने आत्म–मूल्य को पहचानता है और आत्म–सम्मान की अनुभूति करता है, तब उसके व्यक्तित्व का सकारात्मक विकास होता है। व्यक्तित्व के निर्माण में आत्म–सम्मान एक केंद्रीय स्तंभ के रूप में कार्य करता है। आत्म–सम्मान वह गुण है जो व्यक्ति को स्वयं के प्रति सम्मान, आत्म–स्वीकृति और आत्म–गौरव का अनुभव कराता है। यह

भावना व्यक्ति की योग्यताओं, क्षमताओं तथा सामाजिक मान्यता पर आधारित होती है। मैसलो के अनुसार, आत्म–सम्मान व्यक्ति के स्व–मूल्यांकन और दूसरों से प्राप्त सम्मान दोनों से संबद्ध है। उच्च आत्म–सम्मान व्यक्ति को न केवल आत्मविश्वासी बनाता है, बल्कि उसे सामाजिक स्वीकार्यता और व्यावसायिक सफलता की दिशा में भी अग्रसर करता है। इसके विपरीत, निम्न आत्म–सम्मान निराशा, हीनभावना और आत्म–संदेह को जन्म देता है।

आत्म–सम्मान से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई अवधारणा है समायोजन। विद्यार्थी जीवन में अनेक परिस्थितियों और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिनसे तालमेल स्थापित करना आवश्यक होता है। यही प्रक्रिया समायोजन कहलाती है। गेट्स ने समायोजन को एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया बताया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने परिवेश के बीच संतुलन स्थापित करता है। यदि विद्यार्थी परिस्थितियों से सकारात्मक सामंजस्य स्थापित कर लेता है, तो उसका आत्म–सम्मान भी उच्च रहता है। दूसरी ओर, समायोजन में असफलता आत्म–संदेह और असंतुलन को जन्म देती है। समायोजन जीवन का अभिन्न अंग है, जिसे प्रायः पाँच क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है दृ गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन और शैक्षिक समायोजन। गृह समायोजन पारिवारिक वातावरण से, स्वास्थ्य समायोजन शारीरिक एवं मानसिक संतुलन से, संवेगात्मक समायोजन भावनात्मक नियंत्रण से, सामाजिक समायोजन समाज में सहभागिता और व्यवहार से, तथा शैक्षिक समायोजन अधिगम की परिस्थितियों से संबंधित होता है। विद्यार्थी यदि इन सभी क्षेत्रों में संतुलन स्थापित कर लेता है, तो वह एक सुसंस्कृत, आत्मविश्वासी और सक्षम नागरिक बन पाता है। आत्म–सम्मान और समायोजन का संबंध परस्पर पूरक है। उच्च आत्म–सम्मान वाला विद्यार्थी कठिन परिस्थितियों में भी आत्मविश्वास बनाए रखता है और सहज रूप से समायोजन कर लेता है। जबकि निम्न आत्म–सम्मान वाले विद्यार्थी स्वयं को अयोग्य मानकर चुनौतियों का सामना करने में कठिनाई अनुभव करते हैं। एडलर के अनुसार, आत्म–सम्मान अथवा शक्ति की इच्छा व्यक्ति के व्यवहार का प्रमुख प्रेरक तत्व है। इसी कारण विद्यार्थी जीवन में आत्म–सम्मान की स्थिति उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों और सामाजिक सहभागिता पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है (कुमारी एवं सुमन, 2023)।

वर्तमान वैज्ञानिक और तकनीकी युग में विद्यार्थियों को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। बढ़ती प्रतियोगिता, शिक्षित बेरोजगारी, बदलते जीवन–मूल्य और सामाजिक तनाव जैसी परिस्थितियाँ आत्म–सम्मान और समायोजन की परीक्षा लेती हैं। ऐसे परिदृश्य में यदि विद्यार्थी आत्मविश्वास और सकारात्मक दृष्टिकोण से इन चुनौतियों को स्वीकार करता है, तो उसका आत्म–सम्मान सुदृढ़ होता है और वह सफल समायोजन कर पाता है। इसके विपरीत, आत्म–सम्मान की कमी उन्हें निराशा और असंतुलन की ओर ले जाती है (कुमार एवं कुमार, 2023)। शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका इस संदर्भ में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। विद्यालय और महाविद्यालय केवल ज्ञान प्रदाता संस्थान नहीं हैं, बल्कि वे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के प्रमुख केंद्र हैं। शिक्षक–विद्यार्थी तथा सहपाठी–विद्यार्थी के बीच की अंतःक्रियाएँ अनुशासन, सहयोग, आदर और सामाजिक व्यवहार जैसे गुणों को विकसित करती हैं। यदि शैक्षणिक वातावरण सकारात्मक और प्रोत्साहनकारी है, तो विद्यार्थी का आत्म–सम्मान सुदृढ़ होता है और समायोजन क्षमता बढ़ती है। वहीं भय, दबाव और असमानता से भरे वातावरण में समायोजन की असफलता और आत्म–सम्मान में कमी देखी जाती है।

इतिहास और संस्कृति के दृष्टिकोण से भी आत्म–सम्मान का विशेष महत्व है। भारतीय संस्कृति में आत्म–सम्मान की अवधारणा प्राचीन काल से ही केंद्रीय रही है। उपनिषदों की वाणी "आत्मानं विद्या" से लेकर स्वतंत्रता संग्राम के नारे "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है" तक, आत्म–सम्मान को व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की धुरी माना गया है। आज के वैश्वीकरण और डिजिटलीकरण के युग में भी इसकी प्रासंगिकता और बढ़ गई है। प्रतिस्पर्धा, सोशल मीडिया का प्रभाव और सांस्कृतिक तुलना ने विद्यार्थियों में आत्म–सम्मान के स्तर को प्रभावित किया है, जिससे उनके समायोजन की क्षमता पर भी प्रभाव पड़ रहा है।

अतः स्पष्ट है कि आत्म–सम्मान और समायोजन दोनों ही विद्यार्थी जीवन के आवश्यक एवं परस्पर संबंधित तत्व हैं। उच्च आत्म–सम्मान सफल समायोजन को संभव बनाता है और सफल समायोजन आत्म–सम्मान को और अधिक सुदृढ़ करता है। यह द्वंद्वात्मक संबंध न केवल मनोवैज्ञानिक दृष्टि से, बल्कि शैक्षिक परिप्रेक्ष्य से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। विशेषकर परास्नातक स्तर पर, जब विद्यार्थियों का व्यक्तित्व निर्माण निर्णायक चरण में होता है, तब आत्म–सम्मान और समायोजन का अध्ययन अत्यधिक प्रासंगिक हो जाता है।

इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य यह जानना है कि परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों में आत्म–सम्मान और समायोजन के बीच किस प्रकार का संबंध विद्यमान है। यह अध्ययन विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक स्थिति की गहन समझ प्रदान करेगा तथा शिक्षा जगत और समाज को यह मार्गदर्शन देगा कि किस प्रकार विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान को सुदृढ़ कर उनमें समायोजन क्षमता का विकास किया जा सकता है।

2. शोध अध्ययन के उद्देश्य :

1. सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. शोध अध्ययन की परिकल्पना :

1. सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।
2. सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।
3. अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।
4. सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।
5. सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।
6. अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।

4. शोध पद्धति :

4.1 शोध विधि :

प्रस्तुत शोध की प्रकृति को देखते हुए एवं परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु वर्तमान शोध अध्ययन के लिए मात्रात्मक शोध उपागम के अंतर्गत वर्णात्मक अनुसंधान की 'सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया।

4.2 जनसंख्या :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या के रूप में उत्तर प्रदेश के कानपुर जनपद के छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर से सम्बद्ध कानपुर नगर के समस्त अनुदानित महाविद्यालयों के परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया।

4.3 न्यादर्श एवं न्यादर्शन विधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में न्यादर्श का चुनाव करने के लिए उत्तर प्रदेश राज्य के कानपुर नगर में स्थित छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर से सम्बद्ध एडेड एवं स्ववित्तपोषित परास्नातक स्तर के महाविद्यालयों को सम्मिलित किया गया। इसके लिए 120 विद्यार्थियों (सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति) का चयन सम्भाविता न्यादर्शन विधि की स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि के माध्यम से सुनिश्चित किया गया। न्यादर्श आकार का वितरण *चित्र 1* में उल्लिखित है –

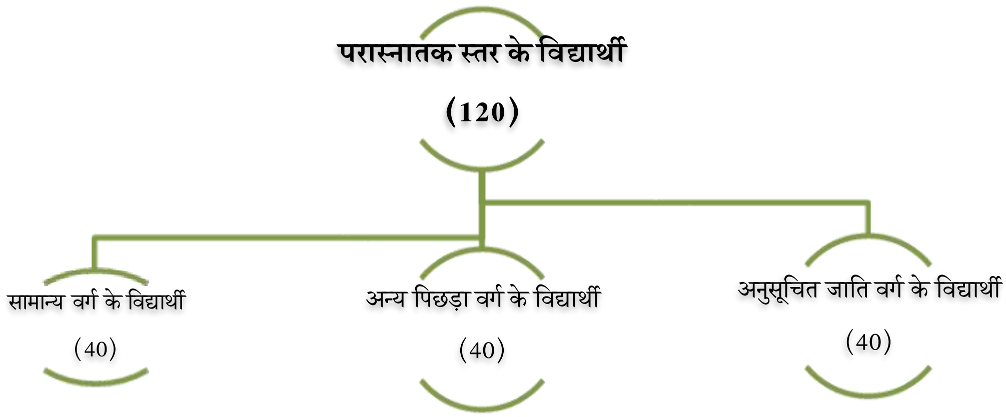

चित्र 1: जाति वर्ग के आधार पर न्यादर्श का वितरण

4.4 शोध उपकरण :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आत्म–सम्मान के परीक्षण हेतु डॉ0 संतोष धर एवं डॉ0 उपेंद्र धर द्वारा निर्मित उपकरण ''सेल्फ स्टीम स्केल'' एवं समायोजन के मापन हेतु मानकीकृत उपकरण प्रो0 ए0के0पी0 सिन्हा एवं प्रो0 आर0पी0 सिंह द्वारा निर्मित ''ऐडजस्टमेंट इन्वेंटरी फॉर कॉलेज स्टूडेंट'' उपकरण का प्रयोग किया गया।

4.5 सांख्यिकीय विधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आंकड़ों के परीक्षण की प्रकृति के आधार पर आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–टेस्ट सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया।

5. परिणाम :

उद्देश्य 1 – सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H_{01} सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 1

सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, क्रान्तिक अनुपात व सार्थकता स्तर का विवरण

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मान	परिणाम
सामान्य वर्ग	40	65.075	18.9931	3.69	0.33	**सार्थक नहीं है।**
अन्य पिछड़ा वर्ग	40	63.875	13.60088			

स्वतंत्रांश=78 के लिए सारणी मान $t_{0.05}$=1.99

तालिका 1 के निरीक्षण से स्पष्ट है कि परास्नातक स्तर के सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 65.075 एवं प्रमाणिक विचलन 18.9931 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार परास्नातक स्तर के अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 63.875 एवं प्रमाणिक विचलन 13.60088 प्राप्त हुआ तथा सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों की मानक त्रुटि का अन्तर 3.69 प्राप्त हुआ है। सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान सम्बन्धी प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच करने के लिए टी–मान की गणना की गयी जिसका मान 0.33 प्राप्त हुआ, जोकि 0.05 सार्थकता स्तर के तालिका मान 1.99 से कम है। अतः यह मान 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं। अतः निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः सम्बन्धित शून्य परिकल्पना ‘‘सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।’’ स्वीकृत होती है। सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों का तुलनात्मक दण्ड आरेख प्रस्तुतीकरण *चित्र 2* में प्रदर्शित किया गया है:

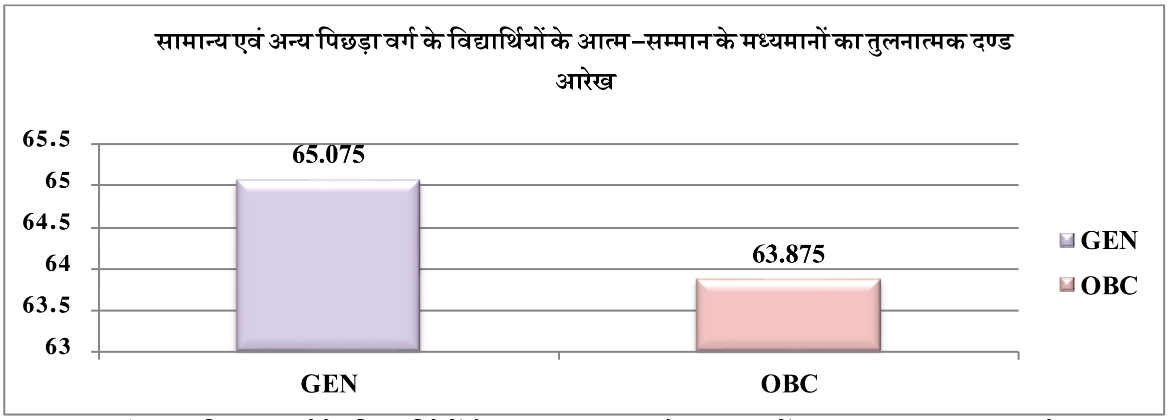

चित्र 2: सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों का तुलनात्मक दण्ड आरेखीय प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य 2 – सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H_{02} सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 2

सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, क्रान्तिक अनुपात व सार्थकता स्तर का विवरण

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मान	परिणाम
सामान्य वर्ग	40	65.075	18.9931	3.93	0.89	**सार्थक नहीं है।**
अनुसूचित जाति वर्ग	40	61.575	16.02544			

स्वतंत्रांश=78 के लिए सारणी मान $t_{0.05}$=1.99

तालिका 2 के निरीक्षण से स्पष्ट है कि परास्नातक स्तर के सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 65.075 एवं प्रमाणिक विचलन 18.9931 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार परास्नातक स्तर के अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 61.575 एवं प्रमाणिक विचलन 16.02544 प्राप्त हुआ तथा सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों की मानक त्रुटि का अन्तर 3.93 प्राप्त हुआ। सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान सम्बन्धी प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच करने के लिए टी–मान की गणना की गयी जिसका मान 0.89 प्राप्त हुआ, जोकि 0.05 सार्थकता स्तर के तालिका मान 1.99 से कम है। अतः यह मान 0.05 स्तर

पर सार्थक नहीं है। अतः निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः सम्बन्धित शून्य परिकल्पना ''सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।'' स्वीकृत होती है। सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों का तुलनात्मक दण्ड आरेख प्रस्तुतीकरण *चित्र 3* में प्रदर्शित किया गया है:

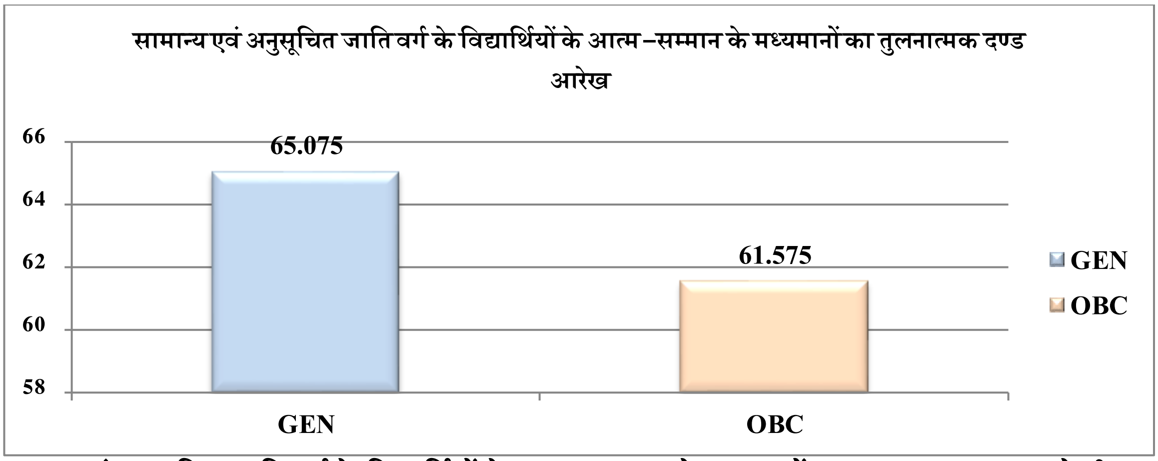

चित्र 3: सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों का तुलनात्मक दण्ड आरेखीय प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य 3 – अन्य पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

***H**$_{03}$* अन्य पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 3

अन्य पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, क्रान्तिक अनुपात व सार्थकता स्तर का विवरण

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मान	परिणाम
अन्य पिछड़ा वर्ग	40	63.875	13.60088	3.32	0.69	**सार्थक नहीं है।**
अनुसूचित जाति वर्ग	40	61.575	16.02544			

स्वतंत्रांश=78 के लिए सारणी मान $t_{0.05}$=1.99

तालिका 3 के निरीक्षण से स्पष्ट है कि परास्नातक स्तर के अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 63.875 एवं प्रमाणिक विचलन 13.60088 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार परास्नातक स्तर के अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 61.575 एवं प्रमाणिक विचलन 16.02544 प्राप्त हुआ तथा अन्य पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों की मानक त्रुटि का अन्तर 3.32 प्राप्त हुआ। अन्य पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान सम्बन्धी प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच करने के लिए टी–मान की गणना की गयी जिसका मान 0.69 प्राप्त हुआ, जोकि 0.05 सार्थकता स्तर के तालिका मान 1.99 से कम है। अतः यह मान 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि अन्य पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों में अन्तर नहीं पाया गया। अतः सम्बन्धित शून्य परिकल्पना ''अन्य पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।'' स्वीकृत होती है। अन्य पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों का तुलनात्मक दण्ड आरेख प्रस्तुतीकरण *चित्र 4* में प्रदर्शित किया गया है:

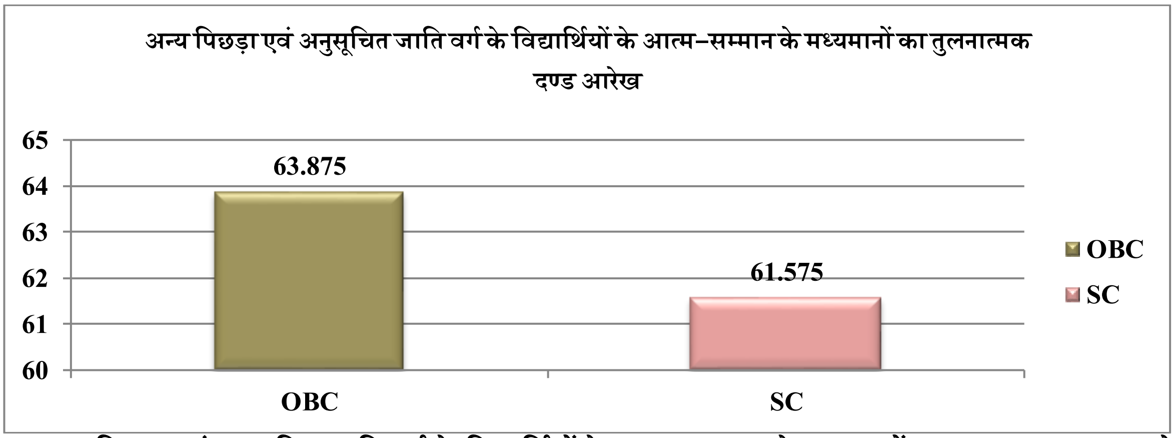

चित्र 4: अन्य पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्यमानों का तुलनात्मक दण्ड आरेखीय प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य 4 – सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H_{04} सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 4

सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, क्रान्तिक अनुपात व सार्थकता स्तर का विवरण

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मान	परिणाम
सामान्य वर्ग	40	25.275	12.61458	3.06	0.52	**सार्थक नहीं है।**
अन्य पिछड़ा वर्ग	40	23.675	14.66793			

स्वतंत्रांश=78 के लिए सारणी मान $t_{0.05}$=1.99

तालिका 4 के निरीक्षण से स्पष्ट है कि परास्नातक स्तर के सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 25.275 एवं प्रमाणिक विचलन 12.61458 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार परास्नातक स्तर के अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 23.675 एवं प्रमाणिक विचलन 14.66793 प्राप्त हुआ तथा सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों की मानक त्रुटि का अन्तर 3.06 प्राप्त हुआ। सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन सम्बन्धी प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच करने के लिए टी–मान की गणना की गयी जिसका मान 0.52 प्राप्त हुआ, जोकि 0.05 सार्थकता स्तर के तालिका मान 1.99 से कम है। अतः यह मान 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों में अन्तर नहीं पाया गया। अतः सम्बन्धित शून्य परिकल्पना ‘‘सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।’’ स्वीकृत होती है। सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों का तुलनात्मक दण्ड आरेख प्रस्तुतीकरण *चित्र 5* में प्रदर्शित किया गया है:

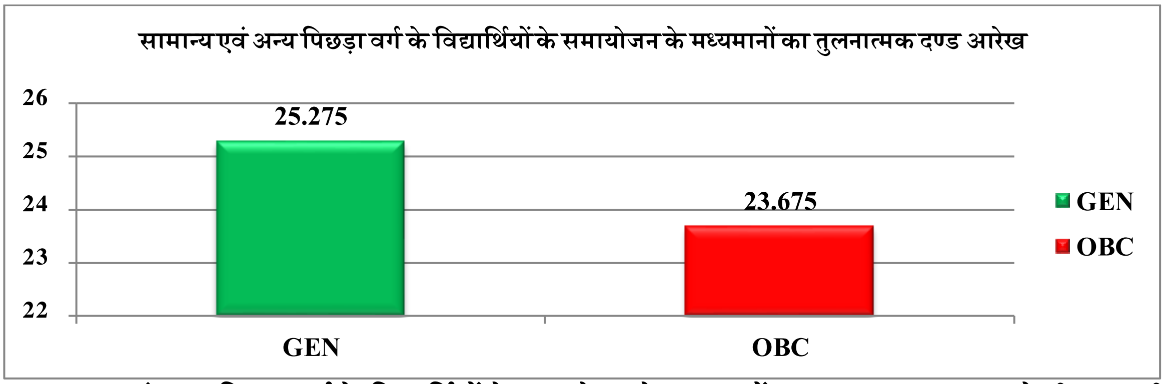

चित्र 5: सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों का तुलनात्मक दण्ड आरेखीय प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य 5 – सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H_{05} सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 5

सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, क्रान्तिक अनुपात व सार्थकता स्तर का विवरण

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मान	परिणाम
सामान्य वर्ग	40	25.275	12.61458	3.44	0.16	सार्थक नहीं है।
अनुसूचित जाति वर्ग	40	29.275	17.74316			

स्वतंत्रांश=78 के लिए सारणी मान $t_{0.05}$=1.99

तालिका 5 के निरीक्षण से स्पष्ट है कि परास्नातक स्तर के सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 25.275 एवं प्रमाणिक विचलन 12.61458 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार परास्नातक स्तर के अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 29.275 एवं प्रमाणिक विचलन 17.74316 प्राप्त हुआ तथा सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों की मानक त्रुटि का अन्तर 3.44 प्राप्त हुआ। सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन सम्बन्धी प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच करने के लिए टी–मान की गणना की गयी जिसका मान 1.16 प्राप्त हुआ, जोकि 0.05 सार्थकता स्तर के तालिका मान 1.99 से कम है। अतः यह मान 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों में अन्तर नहीं पाया गया। अतः सम्बन्धित शून्य परिकल्पना ‘‘सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।’’ स्वीकृत होती है। सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों का तुलनात्मक दण्ड आरेख प्रस्तुतीकरण *चित्र 6* में प्रदर्शित किया गया है:

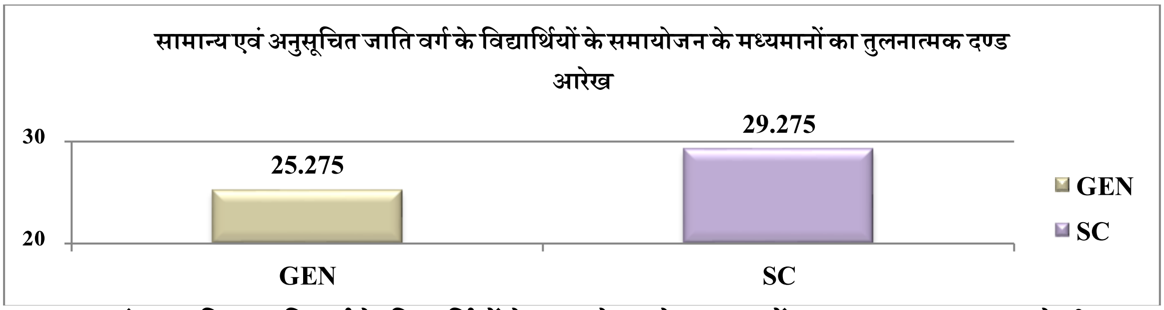

चित्र 6: सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों का तुलनात्मक दण्ड आरेखीय प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य 6 – अन्य पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H_{06} अन्य पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 6

अन्य पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, क्रान्तिक अनुपात व सार्थकता स्तर का विवरण

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मान	परिणाम
अन्य पिछड़ा वर्ग	40	23.675	14.66793	3.64	1.54	**सार्थक नहीं है।**
अनुसूचित जाति वर्ग	40	29.275	17.74316			

स्वतंत्रांश=78 के लिए सारणी मान $t_{0.05}$=1.99

तालिका 6 के निरीक्षण से स्पष्ट है कि परास्नातक स्तर के अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 23.675 एवं प्रमाणिक विचलन 14.66793 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार परास्नातक स्तर के अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 29.275 एवं प्रमाणिक विचलन 17.74316 प्राप्त हुआ तथा अन्य पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों क समायोजन के मध्यमानों की मानक त्रुटि का अन्तर 3.64 प्राप्त हुआ। अन्य पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन सम्बन्धी प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच करने के लिए टी–मान की गणना की गयी जिसका मान 1.54 प्राप्त हुआ, जोकि 0.05 सार्थकता स्तर के तालिका मान 1.99 से कम है। अतः यह मान 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि अन्य पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों में अन्तर नहीं पाया गया। अतः सम्बन्धित शून्य परिकल्पना ''अन्य पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।'' स्वीकृत होती है। अन्य पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों का तुलनात्मक दण्ड आरेख प्रस्तुतीकरण *चित्र 7* में प्रदर्शित किया गया है:

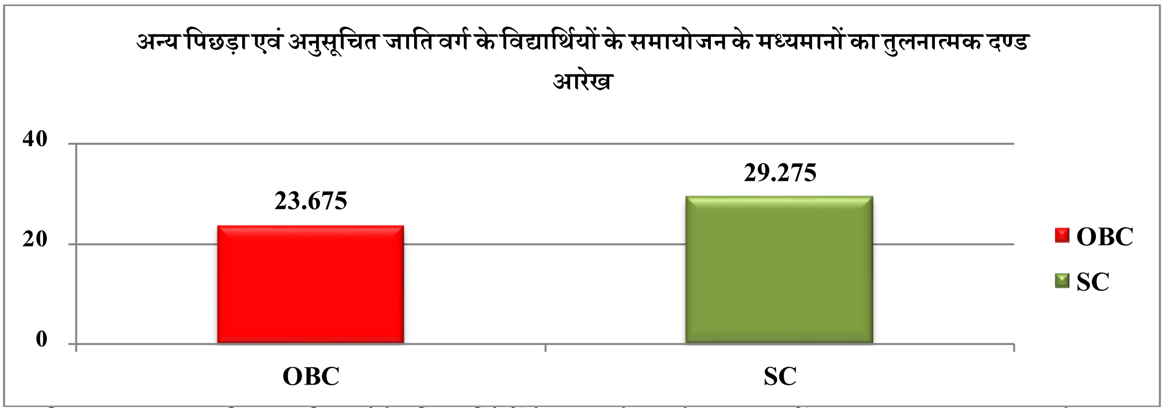

चित्र 7: अन्य पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों का तुलनात्मक दण्ड आरेखीय प्रस्तुतीकरण

6. परिणामों की व्याख्या :

शोध के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि विभिन्न सामाजिक वर्गों के विद्यार्थियों में आत्म–सम्मान और समायोजन के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। सबसे पहले सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान का विश्लेषण किया गया। परिणामों से यह सामने आया कि दोनों वर्गों के आत्म–सम्मान में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं है। दोनों समूहों ने अपने आत्म–सम्मान में समानता प्रदर्शित की। इसका अर्थ है कि सामाजिक वर्ग आत्म–सम्मान को निर्धारित करने वाला प्रमुख कारक नहीं है। समान सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक अवसर प्राप्त होने से वर्गीय भेदभाव कम हुआ है तथा विद्यालयी वातावरण ने सकारात्मक भूमिका

निभाई है। इसी प्रकार सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान में भी कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। सामान्य वर्ग का आत्म–सम्मान संबंधी मध्यमान 65.075 और अनुसूचित जाति का 61.575 रहा। टी–मान 0.89 प्राप्त हुआ, जो 0.05 स्तर पर असार्थक है। इसका अर्थ है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थी भी सामान्य वर्ग के समान आत्म–सम्मान विकसित कर रहे हैं। संभव है कि सरकारी योजनाएँ, छात्रवृत्तियाँ, आरक्षण नीतियाँ और सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम इस दिशा में सहायक सिद्ध हुए हों। जातीय पृष्ठभूमि अब आत्म–सम्मान का निर्णायक कारक नहीं रह गई है, जो एक सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन का संकेत है। अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान का तुलनात्मक अध्ययन करने पर भी कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अन्य पिछड़ा वर्ग का मध्यमान 63.875 और अनुसूचित जाति का 61.575 रहा। टी–मान 0.69 प्राप्त हुआ, जो असार्थक है। इसका तात्पर्य है कि दोनों वर्गों के विद्यार्थियों का आत्म–सम्मान स्तर लगभग समान है। शिक्षा, समाज और सरकारी योजनाओं के प्रयासों ने इस दिशा में वर्गीय अंतर को कम किया है। आत्म–सम्मान केवल सामाजिक वर्ग पर नहीं, बल्कि व्यक्तिगत अनुभव, परिवार का सहयोग, शिक्षकों की प्रेरणा और सामाजिक स्वीकार्यता पर भी निर्भर करता है। समायोजन के संदर्भ में भी यही प्रवृत्ति देखने को मिली। सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। सामान्य वर्ग का मध्यमान 25.275 और अन्य पिछड़ा वर्ग का 23.675 रहा। टी–मान 0.52 असार्थक रहा। इसका अर्थ है कि दोनों वर्गों के विद्यार्थी सामाजिक, पारिवारिक, शैक्षिक और भावनात्मक परिस्थितियों में समान रूप से सामंजस्य स्थापित कर रहे हैं। सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन का विश्लेषण करने पर भी कोई सार्थक अंतर नहीं मिला। सामान्य वर्ग का मध्यमान 25.275 और अनुसूचित जाति का 29.275 पाया गया। टी–मान 1.16 रहा, जो असार्थक है। इसका तात्पर्य है कि दोनों वर्गों के विद्यार्थी जीवन की विविध परिस्थितियों में समान रूप से समायोजन कर पा रहे हैं। अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन में भी कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अन्य पिछड़ा वर्ग का मध्यमान 23.675 और अनुसूचित जाति का 29.275 रहा, परंतु टी–मान 1.54 असार्थक पाया गया। स्पष्ट है कि वर्गीय पृष्ठभूमि का विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता पर कोई विशेष प्रभाव नहीं है।

इन निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में शिक्षा का प्रसार, सामाजिक समानता, आरक्षण नीति, छात्रवृत्ति योजनाएँ और जागरूकता कार्यक्रमों ने विद्यार्थियों में आत्म–सम्मान और समायोजन की समानता स्थापित की है। अब जातीय भिन्नताएँ आत्म–सम्मान और समायोजन के निर्धारण में निर्णायक नहीं रह गई हैं। यह शिक्षा व्यवस्था और समाज के लिए एक सकारात्मक उपलब्धि है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. Alimohammadi, M., Neisani Samani, L., Khanjari, S., & Haghani, H. (2019). The Effects of Multimedia-Based Puberty Health Education on Male Students' Self-Esteem in the Middle School. *International journal of community based nursing and midwifery,* *7*(2), 109–117. Retrieved from https://doi.org/10.30476/IJCBNM.2019.44882
2. Baumeister, R. F., Campbell, J. D., Krueger, J. I., & Vohs, K. D. (2003). Does high self-esteem cause better performance, interpersonal success, happiness, or healthier lifestyles? *Psychological Science in the Public Interest*, *4*(1), 1–44. Retrieved from https://doi.org/10.1111/1529-1006.01431
3. Beck, C. (2017). *A Study of Values, Social Behaviour, Adjustment and Academic Achievement, Motivation of the Students Belonging to Orphanages*. Unpublished Ph.D. Thesis Education. Allahabad Universirty, Prayagraj. Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/185670
4. चौहान, के0 के0 एवं सिंह, एच0 (2021). बी0 एड0 एवं बी0 पी0 एड0 छात्रों के शैक्षिक व सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन. *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च,* *7*(1), 121-124. Retrieved from https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&opi=89978449&url=https://www.allresearchjournal.com/archives/2021/vol7issue1/PartB/6-12-149-768.pdf&ved=2ahUKEwiYiqCg2pKGAxUO1jgGHaCiB044FBAWegQIBhAB&usg=AOvVaw3AefBM4NGuXD9H398k-hWe

5. Crabtree, J. W., Haslam, S. A., Postmes, T., & Haslam, C. (2010). Mental health support groups, stigma, and self-esteem: A social identity approach. *Journal of Social Issues, 66*(3), 553–569. Retrieved from https://doi.org/10.1111/j.1540-4560.2010.01662.x
6. Dijksterhuis, A. (2004). I like myself but I don't know why: Enhancing implicit self-esteem by subliminal evaluative conditioning. *Journal of Personality and Social Psychology, 86*(2), 345–355. Retrieved from https://doi.org/10.1037/0022-3514.86.2.345
7. Dikshit, M. (2015). A Study of Adjustment of Undergraduate Female Students in relation to Values, Modernity and Family Relationship. Unpublished Ph.D. Thesis Education. Allahabad Universirty, Prayagraj. Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/223154
8. Fatima, S. (2016). A study of personal, social and emotional adjustment among college students. *International Journal of Indian Psychology*, *3*(4), 145–152. https://doi.org/10.25215/0304.113
9. घोष, जे0 (2018). विभिन्न परिवेश एवं शिक्षण माध्यमों में अध्ययनरत् किशोर छात्र-छात्राओं की स्व-सामर्थ्य, आत्म-सम्मान एवं कल्याण की भावना का उनके समायोजन की क्षमता पर प्रभाव. अप्रकाशित पी-एच0 डी0 शोध प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र. रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर. Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/432938
10. Haney, P., & Durlak, J. A. (1998). Changing self-esteem in children and adolescents: A meta-analytical review. *Journal of Clinical Child Psychology*, *27*(4), 423–433. Retrieved from https://doi.org/10.1207/s15374424jccp2704_6
11. Holopainen, L., Waltzer, K., Hoang, N., & Lappalainen, K. (2020). The relationship between students' self-esteem, schoolwork difficulties, and subjective school well-being in Finnish upper-secondary education. *International Journal of Educational Research*, *104*, 101688. Retrieved from https://doi.org/10.1016/j.ijer.2020.101688
12. Islam, A. (2017). *A Study of Emotional Intelligence in Relation to Stress, Academic Adjustment and Teaching Aptitude of B.Ed. Students.* Unpublished Ph.D. Thesis Education. Allahabad Universirty, Prayagraj. Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/185650
13. Jafarigiv, S., & Peyman, N. (2019). The effect of life skills training with health literacy strategies on self-esteem and self-efficacy in female students during puberty. *International journal of adolescent medicine and health, 34*(1), 10.1515/ijamh-2019-0121. Retrieved from https://doi.org/10.1515/ijamh-2019-0121
14. Julius, S.J. (2022). A study on the relationship between Self-Esteem and Self-Efficacy among College Students. *The International Journal of Indian Psychology, 10(2),* 1537-1540. Retrieved from https://ijip.in/pdf-viewer/?id=38542
15. Kolubinski, D. C., Frings, D., Nikčević, A. V., Lawrence, J. A., & Spada, M. M. (2018). A systematic review and meta-analysis of CBT interventions based on the Fennell model of low self-esteem. *Psychiatry Research*, *267*, 296–305. Retrieved from https://doi.org/10.1016/j.psychres.2018.06.025
16. कुमार, एस0 एवं कुमार, ए0 (2023). माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन. *भारतीय आधुनिक शिक्षा, एनसीईआरटी, 44*(2), 101-110.
17. कर्नाटक, के0 एवं पाण्डे, डी0 (2022). किशोरों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन. *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च ट्रेंडस एंड इनोवेशन, 7*(12), 640-648. Retrieved from https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&opi=89978449&url=https://www.ijrti.org/papers/IJRTI2212099.pdf&ved=2ahUKEwiWxYSJ2JKGAxUDzTgGHZQnBbk4ChAWegQIGRAB&usg=AOvVaw1GanSBpGVyoXYI1PiT3r9b
18. कुमारी, जी0 (2011). निम्न आर्थिक एवं सामाजिक अनुसूचित जाति (चमार) के स्नातक स्तर के छात्र/छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य, आत्म सम्मान, चिन्ता एवम् अवस्थिति नियन्त्रण का मनोवैज्ञानिक अध्ययन. अप्रकाशित मनोविज्ञान पी-एच0 डी0 शोध प्रबन्ध. महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी. Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/313418
19. कुमारी, वी0 एवं सुमन, एस0 (2023). माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का आत्म-सम्मान के प्रति जागरूकता. *इण्टरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिपिलनरी रिसर्च (आईजेएफएमआर), 5*(4), 1-8. Retrieved from https://journals.sagepub.com/doi/full/10.1177/0731121414536141
20. Li, J., Han, X., Wang, W., Sun, G., & Cheng, Z. (2018). How social support influences university students' academic achievement and emotional exhaustion: The mediating role of self-esteem. *Learning and Individual Differences*, *61*, 120–126. Retrieved from https://doi.org/10.1016/j.lindif.2017.11.016
21. मंगदा, एस0 (2021). उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता का अध्ययन. *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी, 8*(6), 551-557. Retrieved from https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&opi=89978449&url=https://www.ijsrst.com/paper/9195.pdf&ved=2ahUKEwjQ4ouWh4uGAxUHXWwGHbD8AfwQFnoECBQQAQ&usg=AOvVaw2cj9h69M1mr2ZP2658pFo3

22. Mishra, B. K., & Kumar, R. (2011). A comparative study of adjustment and academic achievement of high school students. *Journal of Educational Studies*, *4*(1), 12–16.
23. Pandey, S. (2017). A Study of learning Stress, Adjustment and Mental Health as Correlates of Achievement in Mathematics and Science among VIII Grade Students. Unpublished Ph.D. Thesis Education. Allahabad Universirty, Prayagraj. Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/183702
24. Patel, N. M. & Sharma, M. (2023). Self Esteem and Locus of Control among middle Adolescence. *The International Journal of Indian Psychology, 11(4),* 1897-1912. Retrieved from https://ijip.in/pdf-viewer/?id=42492
25. Paudel, S., Adhikari, C., Chalise, A., & Gautam, H. (2021). Factors associated with self-esteem among undergraduate students of Pokhara Metropolitan City, Nepal: A cross-sectional study. *Consensus*. Retrieved from https://consensus.app/papers/factors-associated-with-selfesteem-among-undergraduate-paudel-adhikari/0f8f7c3731255ff787d0d6c9865d642d/
26. Ratliff, K. A., & Oishi, S. (2013). Gender Differences in Implicit Self-Esteem Following a Romantic Partner's Success or Failure. *Journal of Personality and Social psychology, 105(4),* 688-702. Retrieved from https://www.apa.org/pubs/journals/releases/psp-a0033769.pdf
27. सचान, डी0 एवं मिश्र, आर0 (2024). कानपुर नगर में शिक्षित एवं अशिक्षित परिवारों के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन. *शोधभूमि, 1*(1), 138-145. Retrieved from https://www.shodhbhumi.com/wp-content/uploads/2024/11/22.pdf
28. सन, एम., जमी, एमएसएच, और अकील, एसएच (2017). आत्म सम्मानः दक्षिण एशियाई समुदायों में सांस्कृतिक पहचान और आत्म-सम्मान का एक अध्ययन. *जर्नल ऑफ कल्चरल स्टडीज, 12*(3), 45-58.
29. सिद्दीकी, एस0 (2020). बी0एड0 महाविद्यालय में अध्ययनरत् विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन. *जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजी एंड इनोवेटिव रिसर्च (जेईटीआईआर), 7*(10), 2787-2793. Retrieved from https://www.jetir.org/download1.php?file=JETIR2010363.pdf
30. Shukla, K.N. (2016). *Aggression among Undergraduates Students in Relation to their Self-Esteem, Family Environment and Academic Facilities in Institutions*. Unpublished Ph.D. Thesis Education. Allahabad Universirty, Prayagraj. http://hdl.handle.net/10603/270249
31. Sowislo, J. F., & Orth, U. (2013). Does low self-esteem predict depression and anxiety? A meta-analysis of longitudinal studies. *Psychological Bulletin*, *139*(1), 213–240. Retrieved from https://doi.org/10.1037/a0028931
32. Steiger, A. E., Allemand, M., Robins, R. W., & Fend, H. A. (2014). Low and decreasing self-esteem during adolescence predict adult depression two decades later. *Journal of Personality and Social Psychology*, *106*(2), 325–338. Retrieved from https://doi.org/10.1037/a0035133
33. Tan, J., Lo, P., Ge, N., & Chu, C. (2016). Self-esteem mediates the relationship between mindfulness and social anxiety among Chinese undergraduate students. *Social Behavior and Personality: An International Journal*, *44*(8), 1297–1304. Retrieved from https://doi.org/10.2224/sbp.2016.44.8.1297
34. Usán Supervía, P., Salavera Bordás, C., Juarros Basterretxea, J., & Latorre Cosculluela, C. (2023). Influence of psychological variables in adolescence: The mediating role of self-esteem in the relationship between self-efficacy and satisfaction with life in senior high school students. *Social Sciences*, 12(6), 329. Retrieved from https://doi.org/10.3390/socsci12060329
35. Valizadeh, L., Zamanzadeh, V., Gargari, R., Ghahramanian, A., Tabrizi, F., & Keogh, B. (2016). Pressure and protective factors influencing nursing students' self-esteem: A content analysis study. *Nurse Education Today*, 36, 468–472. Retrieved from https://doi.org/10.1016/j.nedt.2015.10.019